Dr Vandana Suman
Associate Professor
Deptt. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
M.A. Semester — III
Phil. CC—10
Contemporary Western Philosophy

Notes / 1 Bradley: "Appearance and Reality"

GRB BOOKS

समकालीन पाश्चात्य दर्शन में एफ. एच. ब्रैडले को निरपेक्ष प्रत्ययवाद का प्रवर्तक माना जाता है जिनके प्रत्ययवादी विचार में हीगेल विज्ञानवाद अपनी चरम परिणति को प्राप्त करता है। समकालीन पाश्चात्य दर्शन के विकास को जितना अधिक ब्रैडले ने प्रभावित किया है उतना किसी अन्य दार्शनिक ने प्रभावित नहीं किया है। वस्तुतः Pragmatism, Realism, logical Positivism, Existentialism जितने भी दार्शनिक सिद्धान्त हैं उन सभी का विकास ब्रैडले के Absolute Idealism की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ है। यही कारण है कि समकालीन पाश्चात्य दर्शन में ब्रैडले का स्थान सर्वोच्च माना जाता है। उनके विषय में प्रसिद्ध जर्मन लेखक Rudolf Metz ने लिखा है "He was one of the few great builders of system and one of the boldest and most original and speculative thinkers that Britain has ever produced. In modern British thought he takes a high perhaps the highest rank."

Bradley के दार्शनिक रचनाओं में सबसे महत्वपूर्ण रचना Appearance and Reality मानी जाती है जिसके संबंध में यह कहा जाता है कि यह पुस्तक पाश्चात्य दर्शन के विकास को आवश्यक

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

2

Notes

तथा निषेधात्मक दोनों ही रूपों में प्रभावित किया है। यह पुस्तक पाश्चात्य दार्शनिकों के लिए बहुत बड़ा सिरदर्द बन गया है। इस विषय में Mat ने लिखा है " No other work has so deeply troubled the present day Philosophy of Britain provoked so much reflection, and exercised so much influence both positive and negative "

कैयर्ड ने इस पुस्तक के सम्बन्ध में यह कहा है कि कान्ट के बाद यह पुस्तक सबसे अधिक प्रभावशाली है। (The greatest thing since Kant)

ब्रेडले ने उपर्युक्त पुस्तक के अन्तर्गत अनेक तर्कों का प्रयोग करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि विश्व के समस्त पदार्थ आभास है उन्हें वास्तविकता की संज्ञा नहीं दी जा सकती है। आभास की परिभाषा देते हुए ब्रेडले ने कहा है कि आभास वह है जो हमें व्याघातक अनुभूति देता है इसके विपरीत जो व्याघातक रहित है वह वास्तविकता है चूँकि विश्व के समस्त पदार्थ हमें व्याघातक अनुभूति देते हैं अतः वे सभी के सभी आभास है। विश्व के विभिन्न पदार्थ व्याघातक अनुभूति इसलिए देते हैं कि वे आत्म निर्भर नहीं है। एक की वास्तविकता दूसरे की वास्तविकता पर निर्भर

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

3

Notes

मानते हैं। फलस्वरूप एक-दूसरे पर निर्भर करने के कारण वे दोषपूर्ण चक्र की रचना करते हैं और इनका स्वरूप आत्म विरोधी हो जाता है। आत्म विरोधी होने के कारण ही उन्हें आभास की संज्ञा दी जाती है।

ब्रेडले वास्तविकता को एक सर्वव्यापक अविच्छिन्न सम्पूर्ण अनुभव के रूप में स्वीकार करते हैं, जो अपने विभिन्न पक्षों को अपने में निहित करता है और ये पक्ष न तो एक दूसरे से पृथक हैं और न असम्बन्धित। ब्रेडले का यह विचार हीगल की वास्तविकता सम्बन्धी विचार की तरह है लेकिन दोनों में इस बात का अन्तर है कि जहाँ हीगल वास्तविकता को बुद्धि या विचार के साथ एक मान लेते हैं और Real is Rational and rational is real सिद्धान्त को मानते हैं वहीं ब्रेडले वास्तविकता को सिर्फ विचार के साथ ही एक नहीं मानते बल्कि उसे विचार, भावना और इच्छा इन तीनों की समष्टि मानते हैं। साथ ही जहाँ हीगल यह स्वीकार करते हैं कि बुद्धि के आधार पर वास्तविकता का पूर्ण ज्ञान सम्भव नहीं है। इस अर्थ में ब्रेडले को Anty intellectualist कह सकते हैं।

ब्रेडले ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि अगर हम बुद्धि के आधार पर किसी पदार्थ का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करें तो इससे हमें सिर्फ आभास का ज्ञान होगा।

GRB BOOKS

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

क्योंकि किसी भी पदार्थ का वास्तविक ज्ञान तभी हो सकता है जब हम इसे बाह्य सम्बन्धों के आधार पर जानने का प्रयास करें। बाह्य सम्बन्ध को स्वरूप अन्तर्विरोधिक तथा आत्म विरोधी होता है। अद्वैत वेदान्ती मुख्य गुण और गौण गुण, विशेष्य तथा विशेषण इत्यादि के बीच भेद करते हुए वास्तविकता और आभास के अन्तर को दिखलाने का प्रयास किया है। मुख्य गुण को वास्तविक मान लिया जाता है और गौण गुण को आभास इसी प्रकार विशेष्य को वास्तविकता मान लिया जाता है और विशेषण को आभास। लेकिन ब्रैडले मुख्य गुण गौण गुण विशेष्य विशेषण सभी को आभास मानते हैं क्योंकि इनके बीच बाह्य सम्बन्ध के आधार पर अन्तर किया जाता है जो अन्तर्विरोधिक तथा आत्मविरोधी है।

सर्वप्रथम ब्रैडले बाह्य सम्बन्ध को अन्तर्विरोधिक कहने का प्रयास करते हैं। मान लिया जाय कि "क" तथा "ख" दो पद हैं जिनके बीच बाह्य सम्बन्ध के रूप में "ग" पाया जाता है, चूंकि बाह्य सम्बन्ध के अनुसार "ग" का अस्तित्व "क" तथा "ख" से बाहर होगा। अतः "क" तथा "ग" के बीच एक अलग सम्बन्ध होगा और "ख" तथा "ग" के बीच एक दूसरा सम्बन्ध होगा। इस प्रकार

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes/

इस सिद्धान्त के और इतने जायेंगे और इस प्रक्रिया का कहीं अन्त नहीं होगा। इसी प्रकार अनवस्था दोष से ग्रसित हो जायेंगे और यही अनवस्था का दोष बाह्य सम्बन्ध के स्वरूप को अबौद्धिक बना डालता है। ब्रैडले ने लिखा है — "The external view of relation is involved in infinite regress and makes relations unintelligible."

बाह्य सम्बन्ध के स्वरूप को अबौद्धिक प्रमाणित करने के बाद ब्रैडले यह प्रमाणित करने का प्रयास करते हैं कि इसका स्वरूप आत्मविरोधी भी होता है। यह आत्म विरोधी इसलिए है कि सम्बन्धों के लिए गुण की आवश्यकता होती है और गुण के लिए सम्बन्धों की। दोनों मिलकर दोषपूर्ण चक्र की रचना करते हैं जिससे इसका स्वरूप आत्म-विरोधी हो जाता है। दोनों के बीच अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। सर्वप्रथम ब्रैडले ने यह स्वीकार किया है कि गुण के लिए सम्बन्ध की आवश्यकता है। इनके अनुसार "qualities are nothing withought relations."

जब तक हम दो पदार्थों को एक दूसरे के साथ सम्बन्धित नहीं करें तब तक इनके वजूद का ज्ञान सम्भव नहीं है। इससे यह स्पष्ट होता है

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS Notes

कि गुणों के लिए सम्बन्धों की आवश्यकता होती है। ठीक इसीप्रकार सम्बन्धों के लिए गुणों की आवश्यकता है क्योंकि सम्बन्ध स्थापित करने के लिए दो पदों को देखा जाता है और वे पद सम्बन्धित पद होते हैं। इन्हीं सम्बन्धित पदों का गुण कहते हैं। इसतरह ब्रेडले ने कहा है कि "qualities are supported by relations and reality cannot exist without qualities are related."

उपर्युक्त कथन से यह स्पष्ट होता है कि सम्बन्ध और गुण परस्पर आश्रित होने से दोषपूर्ण चक्र (vicious circle) की रचना करते हैं जिससे बाह्य सम्बन्ध का स्वरूप आत्मविरोधी हो जाता है।

इसप्रकार बाह्यसम्बन्ध के स्वरूप को अवास्तविक तथा आत्मविरोधी प्रमाणित करने के बाद ब्रेडले इस निष्कर्ष पर आते हैं कि बाह्य सम्बन्धों के द्वारा हमें सिर्फ आभास का ही ज्ञान हो सकता है वास्तविकता का नहीं। उन्होंने लिखा है "The Conclusion to which I am brought is that a relational way of thought must give appearance and not truth."

ब्रेडले ने इस कथन के द्वारा यह स्पष्ट कर दिया है कि बाह्य सम्बन्धों के आधार

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

7

Notes

पर कोई रूप अभाव का ज्ञान होता है। विश्व का कोई भी पदार्थ ऐसा नहीं जिसका ज्ञान हमें सम्बन्ध के आधार पर नहीं प्राप्त करते हैं क्योंकि कोई भी पदार्थ बिना गुण का नहीं हो सकता है और गुणों के लिए सम्बन्ध की आवश्यकता होती है। किन्तु बाह्य सम्बन्ध का स्वरूप अबौद्धिक तथा आत्मविरोधी भी है अतः इसके आधार पर जिस किसी पदार्थ का बोध प्राप्त किया जायेगा वह भी अबौद्धिक तथा आत्मविरोधी हो जायेगा। चूंकि विश्व के समस्त पदार्थों का ज्ञान बाह्य सम्बन्ध से प्राप्त करते हैं। अतः विश्व का समस्त पदार्थ अबौद्धिक तथा आत्मविरोधी होने के कारण आभास हैं। इसे वास्तविकता की संज्ञा नहीं दी जा सकती है।

ब्रेडले ने एक-एक करके देश काल कारण-कार्य परिवर्तन क्रियाशीलता इत्यादि की धारणाओं की परीक्षा की है। और यह स्पष्ट कर दिया है कि इन धारणाओं के द्वारा हमें आभास का ही ज्ञान होता है क्योंकि ये धारणायें आत्मविरोधी हैं। उन्होंने लिखा है कि— " All these categories with which our intellect or thought interprets the world are found to possess self contradictory nature! Hence non of those can be real, they must be mere

GRB BOOKS
सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

appearances of reality.

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि ब्रेडले अपनी पुस्तक Appearance and reality के अन्तर्गत सबसे पहले स्वतः व्याघात दृष्टिकोण को अपनाते हुए यह निष्कर्ष निकालते हैं कि बुद्धि के आधार पर हमें सिर्फ आभास का ही ज्ञान मिल सकता है वास्तविकता का नहीं क्योंकि बुद्धि बाह्य सम्बन्ध का प्रयोग करती है और बाह्य सम्बन्ध विरोधात्मक तथा आत्मविरोधी होता है। इस अर्थ में ब्रेडले को Anti intellectualist भी कहा जा सकता है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS